आज की साकार मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:13-11-14

सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, हमें बेगर टू प्रिन्स बनाने वाले ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - देही-अभिमानी बनकर ग़ॉडली सर्विस करो तो तुम्हें हर कदम में सफलता मिलती रहेगी.

आज बाबा ने हमें देही-अभिमानी बनने की एक और युक्ति बताते हुए कहा, सदा स्मृति में रखो की हम ग़ॉडली सर्वेन्ट हैं. अगर अन्दर में खुद को ग़ॉडली सर्वेन्ट समझेंगे तो हमें किसी भी प्रकार से मान-पान की कोई भी इच्छा मन में नहीं रहेगी. अगर सेवाधारी कोई भी स्व इच्छा से परे होकर बाबा की यज्ञ सेवा निमित भाव से करता है तो उसमें सफलता जरूर प्राप्त होती हैं. "इच्छा मात्रम अविधा" की स्व स्थिति में रहकर यज्ञ सेवा करने वाले को माया कभी परेशान नहीं करेगी. जीवात्मा जब विकारों से परे होकर शरीर द्वारा पार्ट बजाती है तो उसे देही-अभिमानी अवस्था कहा जाता हैं.

बाबा ने कहा तुम्हारे पास म्यूजियम प्रदर्शनी आदि में बहुत आते हैं. ओपीनियन लिखते हैं कि यह बहुत अच्छा कार्य कर रहे है लेकिन समझते नहीं हैं कि यह किसका कार्य है. थोड़ा बहुत टंच होता है तो आते हैं फिर भी गरीब अपना अच्छा भाग्य बनायेंगे और समझने का पुरुषार्थ करेंगे. साहूकारों को तो पुरुषार्थ करना नहीं है क्योंकि उनमें देह-अभिमान बहुत रहता है ना.

बाबा ने कहा सबकी अच्छी-अच्छी ओपीनियन इकट्ठी करके उनका एक अच्छा किताब बनाओ और उसे गवर्मेन्ट में दिखाओ कि यह राजयोग सबको कितना अच्छा लगता है. विलायत वाले या भारतवासी भी सहज राजयोग जानने चाहते हैं. स्वर्ग के देवी-देवताओं की राजाई जो सहज राजयोग से भारत को प्राप्त होती है तो क्यों न यह म्यूजियम गवर्मेन्ट हाउस के अन्दर लगा दे. जहॉ सब कॉन्फरन्स आदि होती है तो प्राइममिनिस्टर, प्रैजिडैंट आदि भी आयेंगे तो उन्हों को भी मालूम पड़े की यह तो वन्डरफुल नॉलेज है. इसे ही सच्ची शान्ति स्थापन होनी है. बाबा कहते रहते हैं बड़े-बड़े आदमियों के पास जाओ. आगे चल वो भी समझेंगे. यह सर्विस में सफलता तब मिलेगी जब तुम देही-अभिमानी रहकर सेवा करेंगे.

बाबा ने कहा, बच्चों में थोड़ा भी देह-अभिमान न आये कि "मैं ऐसी सर्विस करता हूँ, यह करता हूँ..." जो बच्चे खुद को गॉडली सर्वेन्ट समझते है, गुप्त मेहनत करते है. गुप्त रह विचार-सागर-मंथन कर ज्ञान की अच्छी पॉइन्टस निकालते है वही बड़े-बड़े लोगों को पैगाम दे सकते है. ऐसे प्यार से समझायेंगे कि बेहद के बाप का वर्सा हर कल्प-कल्प भारतवासियों को मिलता है. जिसे ही भारत में सतयुग कि स्थापना होती है जहॉ लक्ष्मी-नारायण का राज्य होता है. लेकिन यह सेवा में सफलता तब होगी जब देही-अभिमानी बनेंगे.

बाबा कहते है बच्चों को देही-अभिमानी बन विचार करना होता है कि आज हम को फलाने प्राइममिनिस्टर को जाकर समझाना है. उनको देही-अभिमानी होकर द्रष्टि देंगे तो साक्षात्कार हो सकता है. लेकिन इसके लिए बच्चों को देही-अभिमानी होकर आत्मा की बैटरी चार्ज करनी है. अपने को आत्मा समझ बाप से योग करने से ही बैटरी तो भरेगी. बाबा समझाते है ज्ञान भल अच्छा है योग कम है तो बैटरी भर न सकें क्योंकि देह का अहंकार बहुत रहता है. बच्चों का योग नहीं होगा तो ज्ञान बाण में जौहर नहीं भरेगा.

बाबा ने बच्चों को प्राप्तिओ से अवगत कराया. बाबा ने कहा, अभी तुम ईश्वरीय परिवार के बने हो. सतयुग में तुम दैवी परिवार के बनते हो. तुम जो आधाकल्प रावण के प्यार से बंदर (विकारी) बन पड़े थे उसे बाप अपना ईश्वरीय प्यार देकर देवता बना रहे हैं. यह प्राप्ति को ध्यान में रखकर, देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करो तो सेवा में सफलता जरूर मिलती रहेगी.

बाबा समझाते हैं - मीठे बच्चों, बाप को याद करो, स्वदर्शन चक्र फिराओ. इसे ही तुम निर्विघ्न होकर सेवा में सफलता को हासिल करेंगे.

ॐ शांति.